



Original Article

**सुशील तंवर की कहानियों में जम्मू-कश्मीर की समस्याएँ
 (मुखबिर कहानी संग्रह के संदर्भ में)**

डॉ. सचिन मदन जाधव

सहयोगी प्राध्यापक, हिंदी विभाग

सदगुरू गाडगे महाराज कॉलेज कराड

Manuscript ID: IJAAR-C130371
 ISSN: 2347-7075
 Impact Factor – 8.141

Volume - 13
 Issue - 3
 January – February 2026
 Pp. 369 - 373

Submitted: 07 Feb. 2026
 Revised: 16 Feb. 2026
 Accepted: 20 Feb. 2026
 Published: 28 Feb. 2026

Corresponding Author:
 डॉ. सचिन मदन जाधव

Quick Response Code:



Website: <https://ijaar.co.in/>



DOI: 10.5281/zenodo.22787241

DOI Link:
<https://doi.org/10.5281/zenodo.22787241>



Creative Commons



सार:

प्रस्तुत शोध-पत्र सुशील तंवर के कहानी-संग्रह मुखबिर में संकलित कथाओं के आधार पर जम्मू-कश्मीर की सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक और मानवीय समस्याओं का समस्यामूलक विमर्श प्रस्तुत करता है। लेखक ने सैनिक जीवन, आतंकवाद, अलगाववाद, गरीबी, धार्मिक कट्टरता, मीडिया की भूमिका, नागरिक-सैनिक संबंध, पहचान-संकट और मानवीय संवेदनाओं के द्वंद्व को यथार्थपरक दृष्टि से चित्रित किया है। इन कहानियों में कश्मीर का जीवन केवल संघर्ष और हिंसा तक सीमित नहीं, बल्कि आशा, करुणा, संवेदना और संवाद की संभावनाओं से भी जुड़ा हुआ दिखाई देता है। शोध-पत्र का उद्देश्य यह स्पष्ट करना है कि साहित्य किस प्रकार जटिल सामाजिक यथार्थ को उजागर करता है और समस्याओं के मूल कारणों को समझने में सहायक होता है।

मुख्य शब्द: जम्मू-कश्मीर, आतंकवाद, सैन्य जीवन, मीडिया, पहचान-संकट, मानवीय संवेदना

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)

This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International License (CC BY-NC-SA 4.0), which permits others to remix, adapt, and build upon the work non-commercially, provided that appropriate credit is given and that any new creations are licensed under identical terms.

How to cite this article:

डॉ. सचिन मदन जाधव. (2026). सुशील तंवर की कहानियों में जम्मू-कश्मीर की समस्याएँ (मुखबिर कहानी संग्रह के संदर्भ में). International Journal of Advance and Applied Research, 13(3), 369 - 373. <https://doi.org/10.5281/zenodo.22787241>

प्रस्तावना:

समकालीन हिंदी कथा-साहित्य सामाजिक यथार्थ के विविध आयामों को अभिव्यक्त करने का सशक्त माध्यम रहा है।

स्वतंत्रता के बाद भारत के विभिन्न क्षेत्रों में उत्पन्न सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक समस्याओं ने साहित्य को नई दिशा दी। विशेष रूप से जम्मू-कश्मीर जैसे संवेदनशील क्षेत्र की



समस्याएँ केवल राजनीतिक नहीं, बल्कि सामाजिक और मानवीय स्तर पर भी गहरे प्रभाव डालती हैं।

सुशील तंवर का कहानी-संग्रह *मुखबिर* सैनिक अनुभवों पर आधारित कथाओं का संग्रह है, जिसमें कश्मीर के जीवन का बहुआयामी चित्र प्रस्तुत किया गया है। लेखक स्वयं सैनिक जीवन से जुड़ा रहा है, इसलिए उसकी दृष्टि केवल बाहरी पर्यवेक्षक की नहीं, बल्कि सहभागी अनुभव की है। यही कारण है कि इन कहानियों में यथार्थ की प्रामाणिकता और संवेदनशीलता दोनों दिखाई देती हैं।

इन कथाओं में आतंकवाद, मुखबिरी, युवाओं का भ्रम, गरीबी, मीडिया का प्रभाव, नागरिक और सैनिकों के बीच अविश्वास, तथा मानवीय करुणा जैसे विषय प्रमुख रूप से उभरते हैं। इस दृष्टि से *मुखबिर* संग्रह समस्यामूलक विमर्श के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण साहित्यिक दस्तावेज बन जाता है। साहित्य में समस्यामूलक विमर्श का उद्देश्य केवल समस्या का वर्णन नहीं, बल्कि उसके कारणों, प्रभावों और संभावित समाधानों की खोज भी होता है। कश्मीर केंद्रित साहित्य में यह विमर्श विशेष रूप से महत्वपूर्ण हो जाता है, क्योंकि यहाँ समस्या केवल स्थानीय नहीं, बल्कि राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर से जुड़ी हुई है।

सुशील तंवर की कहानियाँ इस विमर्श को नए आयाम देती हैं, क्योंकि वे सैनिक और नागरिक—दोनों दृष्टियों को साथ-साथ प्रस्तुत करती हैं।

आतंकवाद और हिंसा की समस्या:

कहानी *मुखबिर* में गुलाम हसन जैसे पात्र के माध्यम से आतंकवाद की भयावहता और मुखबिरों की त्रासदी को प्रस्तुत किया गया है। हसन वर्षों तक सेना के लिए काम करता

है, लेकिन अंततः आतंकवादियों द्वारा उसकी हत्या कर दी जाती है।

यह कथा दर्शाती है कि आतंकवाद केवल सैनिकों के लिए नहीं, बल्कि आम नागरिकों के लिए भी घातक है। मुखबिरों की स्थिति सबसे अधिक दयनीय होती है, क्योंकि वे न तो आतंकवादियों के लिए स्वीकार्य होते हैं और न ही समाज में सम्मानित जीवन जी पाते हैं। मुखबिर हसन का कथन “आप ही बताओ साहब की हर दो-तीन सालों के बाद आने वाले नए अफसर के लिए हम अगर हर बार नए सिरे से खुद को साबित करने की कोशिश करेंगे तो कैसे काम चलेगा” उसके जीवन पर प्रकाश डालता है।ⁱ हर बार नये सिरे से योग्यता सिद्ध करनी पड़ती है। नए साहब के विश्वास पात्र बनने के लिए अधिक जोखिम उठाता है और यही उसकी मृत्यु का कारण है। इस संदर्भ में विवेक अग्रवाल का कथन मुखबिर की सुरक्षितता की वास्तविकता दर्शाने वाला है - “उनकी सुरक्षा का कोई इंतजाम भी पुलिस अधिकारी नहीं करते हैं। बड़े मामलों में भी मुखबिरों को काम हो जाने के बाद उनके ही हाल पर छोड़ दिया जाता है।”ⁱⁱⁱ कहानी में सीमा पार से आतंकियों का आना, स्थानीय सहयोगियों की भूमिका और प्रशासन की सीमाएँ कश्मीर की जटिल समस्या को उजागर करती हैं। यहाँ आतंकवाद केवल राजनीतिक संघर्ष नहीं, बल्कि मानवीय संकट के रूप में सामने आता है।

युवाओं का भ्रम और कट्टरता:

‘लव जिहाद’ कथा में नवेद जैसे युवा पात्र के माध्यम से धार्मिक उन्माद और कट्टरता की समस्या को दिखाया गया है। मौलवी द्वारा जिहाद की प्रेरणा, गरीब युवाओं का चयन और उनके मन में भरे गए भ्रम यह दर्शाते हैं कि किस प्रकार विचारधारा के नाम पर युवाओं का शोषण किया जाता है।



यह कथा स्पष्ट करती है कि आतंकवाद की जड़ें केवल हथियारों में नहीं, बल्कि विचारधाराओं में भी होती हैं। लेखक पाकिस्तान की मानसिकता को उजागर करते हुए लिखते हैं, “वैसे भी पूरे पाकिस्तान में मानो एक ओढ़ लगी थी जिहाद में शिरकत करने और अपने आप को अल्लाह के सामने साबित करने की हां यह बात अलग है कि इस जिहाद में शामिल होने वाले ज्यादातर लोग काम के बेहद गरीब तबके से ताल्लुक रखते थे।”ⁱⁱⁱ जिहाद उनकी पसंद नहीं बल्कि उनकी गरीबी से उठाया गया नाजायज लाभ है। मर मिटने वाले बच्चों की वास्तविकता को इस कथन से समझा जा सकता है - “ज्यादातर लोग मदरसे में पड़े थे और उनमें से बहुत सारे यतीम भी थे।”^{iv} गरीबी, अशिक्षा और बेरोजगारी जैसे सामाजिक कारण युवाओं को हिंसा की ओर धकेलते हैं। लेखक यह संकेत देता है कि यदि समाज युवाओं को शिक्षा और रोजगार के अवसर दे, तो कट्टरता की प्रवृत्ति को काफी हद तक रोका जा सकता है।

आम नागरिक और पहचान का संकट:

‘इस हम क्या चाहते ... आजादी’ कथा में अफजल और उसकी बहन नगमा के माध्यम से आम कश्मीरी नागरिकों की दुविधा को प्रस्तुत किया गया है। एक ओर अफजल सेना के प्रति विरोध की भावना रखता है, तो दूसरी ओर वही सेना उसकी बहन के लिए शिक्षा और चिकित्सा सुविधाएँ उपलब्ध कराती है। यह द्वंद्व कश्मीर के आम नागरिकों की मानसिक स्थिति को दर्शाता है। यहाँ पहचान का संकट उत्पन्न होता है— क्या सेना शत्रु है या सहायक? यह प्रश्न कथा के माध्यम से गहराई से उभरता है।

अफजल द्वारा मेजर विमल को सूचना देना यह दर्शाता है कि अंततः मानवीय चेतना हिंसा पर विजय प्राप्त करती है।

यह कथा कश्मीर की समस्या में नैतिक विवेक की भूमिका को उजागर करती है।

गरीबी और आतंकवाद का संबंध:

‘मुजाहिद’ कथा में इम्तियाज जैसे पात्र के माध्यम से गरीबी और आतंकवाद के संबंध को दिखाया गया है। इम्तियाज गरीबी से तंग आकर आतंकवादी संगठन में शामिल होने के लिए तैयार हो जाता है।

यह कथा स्पष्ट करती है कि आतंकवाद केवल विचारधारा का परिणाम नहीं, बल्कि सामाजिक-आर्थिक असमानता का भी परिणाम है। जब समाज अपने नागरिकों को सम्मानजनक जीवन नहीं दे पाता, तब वे हिंसा के मार्ग पर चलने को मजबूर हो जाते हैं।

इम्तियाज का अंत इस बात का प्रतीक है कि आतंकवाद का मार्ग अंततः विनाश की ओर ही ले जाता है। लेखक इस कथा के माध्यम से युवाओं को हिंसा से दूर रहने का संदेश देता है।

सैन्य जीवन और मानवीय संवेदनाएँ:

‘चॉकलेट’ कथा में सैनिक सुरेश के माध्यम से सैन्य जीवन की कठिनाइयों और मानवीय संवेदनाओं के संघर्ष को दिखाया गया है। सुरेश एक बच्ची की मदद करना चाहता है, लेकिन भीड़ उसे गलत समझ लेती है। मीडिया द्वारा घटना को तोड़-मरोड़ कर प्रस्तुत किया जाता है, जिससे सैनिकों की छवि धूमिल होती है।

यह कथा मीडिया की गैर-जिम्मेदार भूमिका और समाज में फैले अविश्वास को उजागर करती है। साथ ही यह भी दर्शाती है कि कश्मीर जैसे संवेदनशील क्षेत्र में मानवीय व्यवहार भी संदेह के घेरे में आ जाता है। सुरेश द्वारा अंत में चॉकलेट न



देना प्रतीकात्मक है—यह घटना उसके भीतर उत्पन्न भय और टूटते विश्वास को दर्शाती है।

मीडिया और जनमत की समस्या:

सुशील तंवर की कहानियों में मीडिया की भूमिका विशेष रूप से उल्लेखनीय है। ‘चॉकलेट’ कथा में मीडिया द्वारा झूठी खबर फैलाने का प्रसंग यह दिखाता है कि कैसे मीडिया सामाजिक तनाव को बढ़ा सकता है। मीडिया का यह रूप लोकतंत्र के लिए घातक है, क्योंकि यह सत्य के स्थान पर सनसनी को प्राथमिकता देता है। कश्मीर जैसे क्षेत्र में मीडिया का गैर-जिम्मेदार व्यवहार हिंसा और अविश्वास को और गहरा करता है।

सैनिक और नागरिक के बीच दूरी:

इन कहानियों में सैनिक और नागरिक के बीच बढ़ती दूरी भी एक प्रमुख समस्या के रूप में सामने आती है। सैनिक राष्ट्र की रक्षा के लिए तैनात हैं, लेकिन आम नागरिक उन्हें संदेह की दृष्टि से देखते हैं। यह दूरी केवल राजनीतिक नहीं, बल्कि मानसिक और भावनात्मक भी है। लेखक ने सैनिकों की पीड़ा, अकेलापन और पारिवारिक दूरी को संवेदनशीलता के साथ प्रस्तुत किया है।

मानवीय दृष्टि और समाधान की संभावना:

सुशील तंवर की कहानियाँ केवल समस्याओं का चित्रण नहीं करतीं, बल्कि मानवीय दृष्टि को भी सामने लाती हैं। लेखक यह संकेत देता है कि कश्मीर की समस्या का समाधान केवल हथियारों से नहीं, बल्कि संवाद, शिक्षा, रोजगार और मानवीय संवेदनाओं से संभव है।

साहित्य इस संदर्भ में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, क्योंकि यह समाज को आत्मचिंतन के लिए प्रेरित करता है। लेखक की दृष्टि में सैनिक, नागरिक और युवा—तीनों यदि परस्पर विश्वास और संवाद स्थापित करें, तो समस्या का समाधान संभव है।

(क) राजनीतिक-सामाजिक स्तर: कश्मीर की समस्या केवल आतंकवाद तक सीमित नहीं, बल्कि सत्ता, राजनीति और अंतरराष्ट्रीय हस्तक्षेप से भी जुड़ी है। लेखक की कहानियाँ इस तथ्य को उजागर करती हैं कि आम नागरिक सबसे अधिक राजनीतिक संघर्ष का शिकार होता है। ‘मुखबिर’ और ‘मुजाहिद’ जैसी कथाएँ सत्ता और हिंसा के बीच पिसते हुए आम लोगों की त्रासदी को सामने लाती हैं।

(ख) मनोवैज्ञानिक स्तर: इन कहानियों में पात्रों का मनोवैज्ञानिक द्वंद्व अत्यंत महत्वपूर्ण है। अफजल, सुरेश, इम्तियाज और गुलाम हसन जैसे पात्रों के भीतर चलने वाला संघर्ष यह दर्शाता है कि कश्मीर की समस्या केवल बाहरी नहीं, बल्कि आंतरिक मानसिक संघर्ष भी है। यह द्वंद्व आधुनिक मनोविश्लेषणात्मक आलोचना के दृष्टिकोण से भी महत्वपूर्ण है।

(ग) मानवीय-सांस्कृतिक स्तर: सुशील तंवर की कथा-दृष्टि मानवीय मूल्यों पर आधारित है। लेखक यह स्पष्ट करता है कि हिंसा, नफरत और अविश्वास के वातावरण में भी मानवता की संभावना समाप्त नहीं होती। ‘चॉकलेट’ कथा में मानवीय करुणा और सामाजिक अविश्वास का टकराव इस दृष्टि से अत्यंत प्रतीकात्मक है।

भाषिक शैली और प्रतीकात्मकता:

सुशील तंवर की भाषा सरल, संवादात्मक और यथार्थवादी है। उनकी शैली में सैनिक जीवन की कठोरता और मानवीय संवेदना की कोमलता का अद्भुत संयोजन दिखाई देता है। कहानी बिना संवाद के बोलती है। “अब उस बच्ची की



आँखों में एक चमक आ गई थी। सुरेश ने अपनी खिड़की का शीशा हल्का-सा नीचे करना शुरू ही किया था कि उसे जैसे सब कुछ याद आ गया। बत्ती हरी हो गई थी। सुरेश ने चॉकलेट को सीट पर ही फेंक दिया और उस बच्ची के फैलाए हुए हाथों को नजरअंदाज करते हुए अपनी कार की रफ्तार तेज कर दी।⁴⁴ कटु अनुभूति संवेदनाओं की नमी सोख लेती है। वह धीरे धीरे सख्त हो जाती है।

कथाओं में प्रयुक्त प्रतीक अत्यंत महत्वपूर्ण हैं—

- **चॉकलेट:** मानवता और करुणा का प्रतीक
- **मुखबिर:** भय और विश्वास के द्वंद्व का प्रतीक
- **पत्थर:** विद्रोह और आक्रोश का प्रतीक
- **हथियार:** हिंसा और सत्ता का प्रतीक

ये प्रतीक कथाओं को केवल घटनात्मक नहीं, बल्कि वैचारिक स्तर पर भी समृद्ध बनाते हैं।

निष्कर्ष:

सुशील तंवर की कहानियाँ यह सिद्ध करती हैं कि कश्मीर की समस्या को केवल राजनीतिक या सैन्य दृष्टि से नहीं समझा जा सकता। यह समस्या सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और मनोवैज्ञानिक स्तरों पर फैली हुई है। लेखक की दृष्टि में कश्मीर की समस्या का समाधान हिंसा या दमन में नहीं,

बल्कि संवाद, शिक्षा, सामाजिक न्याय और मानवीय मूल्यों में निहित है। साहित्य इस समाधान की संभावना को उजागर करता है और समाज को आत्मचिंतन के लिए प्रेरित करता है। इस प्रकार *मुखबिर* संग्रह न केवल एक कहानी-संग्रह है, बल्कि कश्मीर की समस्या पर आधारित एक महत्वपूर्ण साहित्यिक विमर्श भी है।

संदर्भ सूची:

1. तंवर सुशील, *मुखबिर*, राजपाल एण्ड सन्स, नई दिल्ली, 2024, पृ.8
2. विवेक अग्रवाल 'मुं'भाई रिटर्न, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2016, पृष्ठ 220
3. तंवर सुशील, *मुखबिर*, राजपाल एण्ड सन्स, नई दिल्ली, 2024, पृ.13
4. "अरुण कुमार त्रिपाठी, आज के प्रश्न- 22 तालिबान की वापसी अफगानी जिहाद बनाम अमेरिकी आजादी, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2022 पृ. 134
5. तंवर सुशील, *मुखबिर*, राजपाल एण्ड सन्स, नई दिल्ली, 2024, पृ.66